एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

शान ए हरियाणा: मुर्रा भैंस

(*मंदीप कुमार, दीपक कुमार एवं अभिनंदन कुमार)
भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001, हरियाणा
* संवादी लेखक का ईमेल पता: mbedwal527@gmail.com

विश्व की सबसे बड़ी भैंसों की आबादी भारत में पाई जाती है जो कि लगभग विश्व की कुल भैंसों का 56.4 फ़ीसदी है | इसके साथ ही दुनिया की सबसे अच्छी भैंस की नस्ल यानी मुर्रा के मामले में भारत प्राथमिक वैश्विक स्थिति रखता है | भैंस पालन उन किसानों के लिए अधिक फायदेमंद माना जाता है जिनके पास हरा चारा, पानी और संतुलित भोजन पर्याप्त मात्रा में होता है | मुर्रा भैंस मुख्य रूप से हरियाणा और आसपास के राज्यों जैसे कि पंजाब एवं उत्तर प्रदेश में पाई जाती है किंतु अब यह दूसरे राज्यों तथा दूसरे देशों में भी पाली जाती है | मुर्रा भैंस बेशुमार खूबियां व दुग्ध उत्पादन क्षमता की वजह से विश्व में सबसे अच्छी नस्ल की भैंस के नाम से प्रसिद्ध हो गई है |

हरियाणा राज्य का भौगोलिक क्षेत्रफल 24,212 वर्ग किलोमीटर है जो कि देश के क्षेत्रफल का 1.3 प्रतिशत है | हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है और इसमें लगभग 70 फ़ीसदी जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है | इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से रहने वाले लोग छोटे किसान और कृषि मजदूर हैं जो कि गाय, भैंस, बकरी, व भेड़ पालते हैं | राज्य में गाय की अपेक्षा मुर्रा भैंस की जनसंख्या अधिक है | वैसे तो मुर्रा हरियाणा के लगभग सभी गांवों में पाई जाती है लेकिन मुख्य रूप से हिसार, भिवानी, जींद, रोहतक, फतेहाबाद, झज्जर और पानीपत के गांवों में इसका बोलबाला है | हिसार के ही एक निकट गांव "सिंघवा" में मुर्रा भैंस का पालन इतना होने लगा है कि लोग अब यहां मुर्रा को "धन्नो" के नाम से बुलाते हैं |

मुर्रा भैंस की भौतिक विशेषताएं

आमतौर पर मुर्रा भैंस का रंग काला स्याह होता है, हालांकि कुछ भैंसे हो सकती हैं जिनके सिर, पैर और पूँछ पर सुनहरे रंग के बाल पाए जाते हैं | इनका शरीर भारी भरकम होता है, सींग छोटे और पीछे की ओर घुमावदार होते हैं | इनकी आंखें छोटी, काली और उभरी हुई होती हैं | इनकी गर्दन काफी लंबी

और पीठ काफी चौड़ी होती है | मुर्रा भैंस का अयन विकसित तथा दूध शिराएँ उभरी हुई हौती है | इनके शरीर का वजन 450 से 550 किलोग्राम तक होता है |

मुर्रा भैंस का दूध उत्पादन

मुर्रा भैंस में दूध का उत्पादन अधिक होता है | ये अन्य प्रजाति की भैंसों की तुलना में दो से तीन गुणा ज्यादा दूध देती है | यह औसतन 14 से 20 लीटर प्रतिदिन दूध देती है | हाल ही में, भारत सरकार द्वारा आयोजित अखिल भारतीय दूध उपज प्रतियोगिता में एक मुर्रा भैंस से 1 दिन में सबसे अधिक 31.5 लीटर दूध की उपज दर्ज की गई है, यह आंकड़ा काफी प्रशंसनीय है | मुर्रा भैंस आमतौर पर एक साल में 280 से 310 दिन तक दूध देती है | इनके दूध में फैट की मात्रा सबसे अधिक होती है जो कि लगभग 7 से 8 प्रतिशत है, जिसके कारण मुर्रा भैंस का दूध अधिक रुपए में बिकता है | गुणवत्ता की वजह से मुर्रा भैंस को हरियाणा में "काला सोना" कहा जाता है |

मुर्रा भैंस के लाभ

यह भारत में किसी भी तरह की जलवायु परिस्थितियों को अपनाने में सक्षम है जैसे कि गर्मी अथवा ठंड में जीवित रह सकती है | मुर्रा भैंस की देख-रेख काफी आसान होती है | यह कहना काफी हद तक उचित है कि अन्य प्रजाति की भैंसों की तुलना में मुर्रा भैंस का स्वास्थ्य काफी बेहतर रहता है | इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी काफी अच्छी होती है | मुर्रा भैंस पालने में सबसे बड़ा लाभ यह भी है कि इसका एक से डेढ़ वर्ष का बच्चा 25 से 30 हजार रुपये और दो-तीन वर्ष का नर बच्चा ("पाड़ा") 50 से 60 हजार रुपये में आसानी से बिक जाता है | इन सभी कारणों से हरियाणा के किसानों में मुर्रा भैंस को पालने की विशेष दिलचस्पी दिखाई देती है जो कि काफी सराहनीय है |